सूचना

विश्व पुस्तकालय का सपना

निरूपा सेन

अमरीका के कार्नेगी मेलन विश्वविद्यालय ने 'वैश्विक पुस्तकालय' को इंटरनेट पर चालू किया है। इस वेबसाइट का नाम है www.ulib.org। वेब पेज से प्राप्त जानकारी से पता चलता है कि एण्ड्रू कार्नेगी और अन्य परोपकारी लोगों ने 'जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने और नागरिकों को अवसर उपलब्ध कराने में सार्वजनिक पुस्तकालयों की सम्भावना' को महसूस किया। इनका मुख्य उद्देश्य साहित्यिक और वैज्ञानिक रचनाओं को डिजिटल रूप में संरक्षित करना तथा हरेक इलाके में उसे सबको उपलब्ध कराना है।

10 लाख किताबों वाले इस डिजिटल पुस्तकालय कार्यक्रम में शुरुआत में 10 लाख किताबों का एक संग्रह सभी के लिए निःशुल्क उपलब्ध कराने की योजना है। यह काम चार सालों में पूरा हो जाने की उम्मीद है। और अगले दस सालों में ओ.सी.आर. (ऑप्टिकल कैरेक्टर रिक्गनिशन) तकनीक पर आधारित एक करोड़ और किताबें तैयार की जाएंगी। इसमें विषय तलाश करने के लिए इंडेक्स होगा।

इस दौरान भाषा-प्रोसेसिंग सम्बंधी काफी शोध कार्य भी होंगे। जैसे मशीनों द्वारा अनुवाद, संक्षेपीकरण, बुद्धिमान सूचीकरण और जानकारी प्राप्त करना आदि क्षेत्रों में शोध होंगे। ध्येय वैश्विक पुस्तकालय को दुनिया भर में कई जगहों पर लागू करना है। अंततः लक्ष्य सभी किताबों को डिजिटल रूप में लाना होगा। 10 लाख किताबों के इस लक्ष्य को पा जाने पर हमारे पास लगभग 25 करोड़ पन्ने यानी 5000 अरब अक्षरों के रूप में जानकारी होगी।

मई 2002 में भारत में भी तय किया गया है कि केंद्र सरकार की एक एजेंसी भारत में '10 लाख किताबों' की पहल करेगी। इसके तहत एक कंसॉर्शियम बनाया जाएगा जो तकनीकी चुनौतियों, कानूनी और कॉपीराइट के मुद्दों, किताबों के चुनाव, मेटा डेटा मानक, सर्च इंजन और सर्वर प्रबंधन पर ध्यान देगा। चीन और अमरीका के साथ-साथ इस कंसॉर्शियम में भारत की भागीदारी निम्न संगठनों के ज़रिए होगी - अरुलमिगु कैलाशलिंगम इंजीनियरिंग कॉलेज, गोवा विश्वविद्यालय, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंफॉर्मेशन टेक्नॉलॉजी, इलाहाबाद, इंडियन इस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बैंगलोर, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इंफॉर्मेशन टेक्नॉलॉजी और रिसर्च एकेडमी, तिरुमला तिरुपति देवस्थानम, महाराष्ट्र इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन, मुम्बई और पुणे विश्वविद्यालय।

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस के एन. बालकृष्णन इस नवाचारी कार्यक्रम के मुख्य व्यक्ति रहे हैं। वे कहते हैं कि यह एक व्यवस्थापन सम्बंधी चुनौती है। इसमें 10 लाख किताबों के 40 करोड़ से भी ज़्यादा पन्ने स्कैन करने होंगे। इंडियन एकेडमी ऑफ साइंसेज़, बैंगलोर के जर्नल के पिछले अंकों को वेब में डालने के लिए मिनोल्टा ps7000 स्कैनर का इस्तेमाल किया गया। यह कागज़ के घुमाव/गोलाई के हिसाब से एड्जेस्ट हो जाता है। इससे एक दिन में लगभग 8000 पन्ने स्कैन किए जा सकते हैं। इसके बाद चित्रों की छंटाई और सफाई कार्नेगी मेलन विश्वविद्यालय और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस द्वारा विकसित सॉफ्टवेयर से की गई। यह चित्रों की प्रोसेसिंग करने वाला सॉफ्टवेयर कागज़ के घुमाव का ध्यान रखता है। इससे मोटी किताबों की सपाट स्कैनिंग की जा सकती है और किताबों की बाइंडिंग को भी नुकसान नहीं होता।

कार्यविधि : पहला कदम है एक आभासी (वर्चुअल) केंद्रीय डेटाबेस तैयार करना जो दुनिया भर में कहीं से भी पहुंच के भीतर हो। डेटाबेस को दुनिया भर में परावर्तित करके सर्वत्र उपलब्धता सुनिश्चित की जा